INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 2

भारत + विश्व का इतिहास और कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp Link- https://wa.link/uwc5lp

Online Order Link- https://bit.ly/3X6MGue

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	प्राचीन भारत का इतिहास	
1.	**भारत के सांस्कृति आधार** • सिन्धु घाटी सभ्यता • महत्त्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं • साहित्यिक स्त्रोत • उत्तरवैदिक कालीन प्रमुख यज्ञ	1
2.	**प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन** • आजीवक सम्प्रदाय • दर्शनशास्त्र • धर्म दर्शन • योगदर्शन • मीमांसा दर्शन	15
3.	**प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ** • मौर्य वंश • कण्व वंश • सातवाहन वंश • शक वंश • कुषाण वंश • गुप्त वंश • संगम वंश • चालुक्य वंश • पल्लव राजवंश • चोल वंश	33
4.	**प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु** • सिन्धु घाटी सभ्यता • पत्थर की मूर्तियाँ • आभूषण • मंदिर वास्तुकला • स्थापत्य कला • काव्य ग्रंथ और नाटक • भारतीय चित्रकला • भारतीय नृत्य कलाएं • भारतीय ज्ञान एवं मूल्य व्यवस्था तथा वर्णाश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ संस्कार, दर्शन एवं शिक्षा	60
	मध्यकालीन भारत	

1.	**अरब आक्रमण**	99
2.	• सल्तनत काल • प्रमुख सल्तनत शासकों की उपलब्धियां • गुलाम वंश के शासक • खिलजी वंश • तुगलक वंश • सैयद वंश • लोदी वंश • बहमनी एवं विजय नगर साम्राज्य • तुलुव वंश	102
3.	**मुग़ल काल**	116
4.	**मध्यकाल में कला एवं वास्तु** • मुगलकालीन स्थापत्य कला • दक्षिण भारतीय स्थापत्य कला • मध्यकालीन हिन्दू मंदिर • चित्रकला एवं संगीत का विकास	121
5.	**भक्ति तथा सूफी आंदोलन** • भक्ति आंदोलन • सूफी आंदोलन	131
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	**आधुनिक भारत का विकास** • यूरोपीय कम्पनियों का आगमन • मुग़ल साम्राज्य का पतन • मराठा साम्राज्य • गवर्नर, गवर्नर जनरल एवं वायसराय एवं उनके कार्य	137
2.	**राष्ट्रवाद का उदय** • 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह • राजनीतिक – धार्मिक आंदोलन • ब्रिटिश भारत में जनजातीय आंदोलन • भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय • विभिन्न नेता एवं संस्थाएं	158
3.	**स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन** • राष्ट्रीय आंदोलन • विचारधारा एवं कार्य पद्धति • क्रांतिकारी आंदोलन का पतन • गांधीवाद	181

	• *महत्वपूर्ण योगदान कर्ता*	
५.	***स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन*** • *1947 – 1947 के बीच का भारत* • *देशी रियासतों का एकीकरण* • *राज्यों का भाषायी पुनर्गठन* • *भारत सरकार की प्रमुख योजनाएँ*	**229**
	आधुनिक विश्व का इतिहास	
1.	***पुनर्जागरण व धर्म सुधार*** • *पुनर्जागरण की प्रमुख कारण* • *मानववाद* • *धर्म सुधार* • *युद्ध के कारण*	**249**
2.	***अमेरिका में स्वतंत्रता संग्राम, फ़्रांसीसी क्रांति (1789) व औद्योगिक क्रांति*** • *अमेरिका स्वतंत्रता संग्राम* • *अमेरिकी दृष्टिकोण में परिवर्तन* • *फ़्रांसीसी क्रांति की घटनाएँ* • *फ़्रांसीसी क्रांति में दार्शनिकों का योगदान* • *औद्योगिक क्रांति* • *औद्योगिक क्रांति के कारण* • *औद्योगिक क्रांति के परिणाम* • *कृषि के क्षेत्र में विकास* • *परिवहन एवं संचार में सुधार* • *रुसी क्रांति* • *रुसी क्रांति की प्रमुख घटनाएं*	**273**
3.	***जर्मनी में नाजीवाद एवं इटली में फासीवाद*** • *नाजीवाद* • *नाजीवाद के उदय के प्रमुख कारण* • *हिटलर का उदय* • *इटली में फासीवाद* • *बेनिटो मुसोलिनी का उदय* • *समाज और शिक्षा पर प्रभाव*	**304**
4.	***विश्व युद्ध*** • *विश्व युद्धों का प्रभाव* • *राष्ट्र संघ का निर्माण* • *राजनीतिक परिणाम*	**313**

अध्याय – I

भारत के सांस्कृतिक आधार

- **सिन्धु घाटी सभ्यता**

इतिहास का अध्ययन : –

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है –

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल –

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्त्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।
- मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

- आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्त्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।
- इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी ।
- इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।
- इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की हैं ।
- **राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा** की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्त्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- यह 13 लाख km वर्ग में फेली हुई है
- यह भारत पाकिस्तान एव अफगानिस्तान में फेली हुई है
- यह कास्य युगीन सभ्यता है
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है-

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रांति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया

- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों** की खोज की।

सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ –

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है ।
- मंगोलियन - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।

- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**

कार्बन 14 (C^{14}) - 2600 -1900 ई.पू.-NCERT के अनुसार
ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

नदी में बाढ़ के कारण	मार्शल मैके एस.आर.राव
बाह्य आक्रमण	गार्डन चाइल्ड व्हीलर पिगट
जलवायु परिवर्तन	आरेल स्टाइन अमला नन्द घोष
प्राकृतिक आपदा	केन्यू. आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार –

- इस सभ्यता का विस्तार **पाकिस्तान और भारत** में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट

- डाबर कोट

- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है। इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते है।

मोहनजोदड़ों	=	हड़प्पा
चन्हूदड़ों	=	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	=	रहमान टेरी
आमरी	=	गुमला
अलीमुराद	=	जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

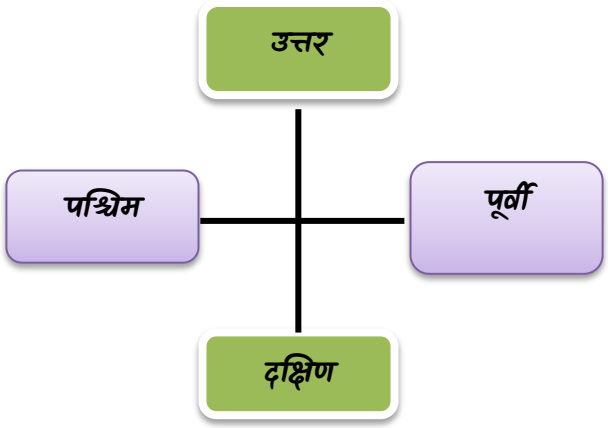

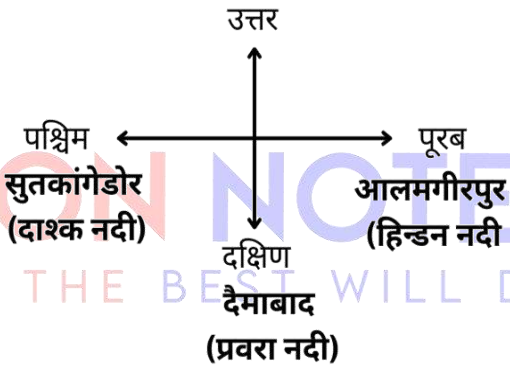

- **हरियाणा- राखीगढ़ी,** सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** – कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा रोपड़ (रुपनगर) - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान - कालीबंगा, बालाथल**
  तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर - सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - **सनौली**
- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, **लोथल,** रोजदिखी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार

- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  - सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  - फैलाव- त्रिभुजाकार
  - क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलोमीटर
  - पूर्व से पश्चिम -1400 km
  - उत्तर से दक्षिण -1600 km

स्थल	नदियों के नाम	उत्खनन का वर्ष	उत्खननकर्ता	वर्तमान स्थिति
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ों	सिन्धु	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्ध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटदीजी	सिन्धु	1955	फजल अहमद	सिन्ध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)
रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ ज़िला (भारत)
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत)
आलमगीरपुर	हिंडन	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)
बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ : विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धौलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविन्द नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।

- **सिन्धु सभ्यता के 7 नगर**
  - हड़प्पा
  - बनावली
  - मोहनजोदड़ों
  - धौलावीरा
  - चन्हूदड़ों
  - लोथल
  - कालीबंगा

महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं

❖ **हड़प्पा**

रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज **दयाराम साहनी** ने की थी ।

खोज- वर्ष 1921 में

उत्खनन-

i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा ।
ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
iii. 1996 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा

- हड़प्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- **पिगट ने** हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की **जुड़वा राजधानी** कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है ।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है ।
- स्वस्तिक का निशान ,मोहरे
- नदी के किनारे 12 अन्नागार मिलते हैं
- हड़प्पा से प्राप्त **कब्रिस्तान को R-37** नाम दिया।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया ।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं ।

  पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हड़प्पा के अवशेषों में **दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति** महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न-हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा जोड़ा सही नहीं है?

A. ई. जे. एच. मैके - सुमेर से लोगों का पलायन
B. मार्टीमर व्हीलर - पश्चिमी एशिया से सभ्यता के विचार का प्रवसन
C. अमलानंद घोष - हड़प्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता से हुआ
D. एम.आर. रफीक. मुगल- हड़प्पा सभ्यता ने मेसोपोटामिया सभ्यता से प्रेरणा ली।
उत्तर – D

मोहनजोदड़ों

- **सिन्धु नदी** के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में **राखलदास बनर्जी** ने की थी।
- **उत्खनन** - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  - मार्शल
  - जे.एच. मैके
  - जे.एफ. डेल्स

स्थिति -

लरकाना (सिंध प्रान्त)पाकिस्तान
सिन्धु नदी के तट पर

- हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदड़ों का नगर **कच्ची ईंटों** के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ों को **स्तूपों का शहर** भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले **चाँदी के दो सिक्के** मिले हैं।
- **वस्त्र निर्माण** का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण – मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है । (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक **20 खम्भों वाला सभाभवन** मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- इसमे उत्तर व दक्षिण में सीडियां बनी हुई है
- तीन तरफ बरामदे है बरामदे के पीछे कई कक्ष है
- सूती कपड़ो के साक्षय मिले है
- हाथी का कपाल खंड मिला है
- नर्तकी की मूर्ति जो धातु की बनी हुई है इसने एक हाथ में चूड़िया पहन रखी है
- मेसोपोटामिया की मुहर मिली है
- पशुपति नाथ की मुहर मिली है इसके बायीं ओर गेंडा व भैंसा तथा दाई ओर बाघ ओर हाथी तथा सामने दो हिरन है
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं ।
- बड़ी संख्या में **कुओं** की प्राप्ति ।
- 8 कक्षों वाला **विशाल स्नानागार** यहीं से प्राप्त हुआ है। इसे मार्शल ने आश्चर्यजनक निर्माण कहा ।

कालीबंगा-

- खोज **अमलानन्द घोष** द्वारा **गंगानगर** में
- **सरस्वती नदी** (वर्तमान **घग्घर** के तट पर)
- कालीबंगा **वर्तमान में हनुमानगढ़** में है ।
- **उत्खनन - बी.बी लाल** 1953 में
  - वी. के. थापड़
  - D .खर्रे
  - SP .श्रीवास्तव

प्रश्न - सुमेलित कीजिए

सूची-I (तीर्थकर) सूची-2 (उनके संज्ञान)

(A) पार्श्वनाथ (i) वृषभ

(B) आदिनाथ (ii) सिंह

(C) महावीर (iii) सर्प

(D) शांतिनाथ (iv) हिरण

कूट -

	a	b	c	d
(A)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(B)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(C)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(D)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)

उत्तर-D

प्रश्न - वरकारी सम्प्रदाय की मुख्य पीठ अवस्थित है

A. श्रृंगेरी में B. पंढ़रपुर में

C. नाडियाँ में D. वाराणसी में

उत्तर-B

प्रश्न - सम्प्रदाय, जो नियति के अटलता में विश्वास करता था?

A. आजीवक B. चार्वाक

C. बौद्ध D. जैन

उत्तर-A

मुख्य परीक्षा

1. 'अर्जुन की तपस्या' प्रतिमा का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
2. बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के अलावा भारत के किन्हीं दो अनीश्वरवादी धार्मिक संप्रदाय के नाम लिखिए।

अध्याय - 3

प्रमुख राजवंशों के महत्त्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ

❖ मौर्य वंश

राजनीतिक इतिहास

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू.)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से (मगध में)
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे।
- **पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण**
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी चाणक्य प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने **अर्थशास्त्र नामक पुस्तक** की रचना की।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं।

❖ चन्द्रगुप्त मौर्य (321 - 298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्यूकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- **उपाधियाँ** - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

प्रमुख तथ्य : चन्द्रगुप्त मौर्य

सेल्युकस से युद्ध और संधि (305 ई.पू.)

चन्द्रगुप्त के शासनकाल की सबसे बड़ी सैन्य सफलता सिकंदर के सेनापति **सेल्युकस निकेटर** को हराना थी।

- **संधि की शर्तें:** युद्ध के बाद हुई संधि में सेल्युकस ने चन्द्रगुप्त को चार क्षेत्र सौंपे: **एरिया (हेरात), अराकोसिया (कंधार), जेड्रोसिया (बलूचिस्तान)** और **पेरिपेनिसदाई (काबुल)**।
- **वैवाहिक संबंध:** सेल्युकस ने अपनी पुत्री **हेलेना** का विवाह चन्द्रगुप्त से किया।
- **उपहार:** चन्द्रगुप्त ने बदले में सेल्युकस को **500 हाथी** उपहार में दिए।
- **राजदूत:** सेल्युकस ने अपना राजदूत **मेगस्थनीज** चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा, जिसने 'इंडिका' लिखी।
- यूनानी लेखकों ने **पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से संबोधित** किया है।
- **'चन्द्रगुप्त' नाम का प्राचीनतम उल्लेख रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख** में प्राप्त हुआ है।
- जीवन के अंतिम दिनों में चन्द्रगुप्त ने **श्रवणबेलगोला में जैन विधि से उपवास पद्धति** (संलेखना पद्धति) **द्वारा प्राण त्याग दिये।**
- **चन्द्रगुप्त के समय में भूमि पर राज्य तथा कृषक दोनों का अधिकार था।**
- आय का प्रमुख स्त्रोत भूमिकर (भाग) था। संभवतः कर (Tax) उपज का 1/6 होता था।
- **मुद्रा - पंचमार्क या आहत सिक्के।**
- इसी के काल से सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग किया गया।
- चन्द्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था।

❖ **मेगस्थनीज**

- मेगस्थनीज सेल्यूकस 'निकेटर' का राजदूत था।
- **इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।**
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था।
- यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को **सेंड्रोकोट्स** नाम दिया।
- चन्द्रगुप्त के संरक्षण में प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में हुई थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप दिया था।

❖ **बिन्दुसार (298-273 ई.पू.)**

- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा।
- बिन्दुसार के काल में भी चाणक्य प्रधानमंत्री था।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- बिन्दुसार ने एंटियोकस से मदिरा, सूखा अंजीर तथा एक दार्शनिक भेजने की मांग की थी, परन्तु एंटियोकस ने मदिरा तथा सूखे अंजीर तो भेजे लेकिन दार्शनिक नहीं भेजे।
- **अमित्रघात** अर्थात् 'शत्रुओं का वध करने वाला' बिन्दुसार की उपाधि थी। उसका अन्य नाम भद्रसार तथा सिंहसेन भी था।
- **तक्षशिला का विद्रोह:** बिन्दुसार के शासनकाल में तक्षशिला में दो बड़े विद्रोह हुए।
- पहले विद्रोह को दबाने के लिए उन्होंने अपने पुत्र **अशोक** को भेजा।
- दूसरे विद्रोह को दबाने के लिए उन्होंने अपने बड़े पुत्र **सुसीम** को भेजा।

❖ **अशोक महान**

- अशोक अपने **पिता बिन्दुसार** के शासन काल में प्रान्तीय प्रशासक (उज्जयनी) के पद पर था।
- प्राचीन भारतीय इतिहास का सर्वाधिक प्रसिद्ध सम्राट अशोक था।
- अशोक के पिता **बिन्दुसार** और माता का नाम **शुभद्रांगी** (जनपद कल्याणी) था।
- बिन्दुसार की मृत्यु के बाद अशोक को सत्ता प्राप्त करने के लिए अपने भाइयों (सुसीम आदि) के साथ कड़ा संघर्ष करना पड़ा। दीपवंश और महावंश के अनुसार, उन्होंने अपने 99 भाइयों की हत्या कर सिंहासन प्राप्त किया, हालांकि इतिहासकार इसे अतिशयोक्ति मानते हैं।
- सर्वाधिक अभिलेखीय प्रमाण इसी के काल के मिलते हैं।
- उन्हें 'चक्रवर्ती सम्राट' और 'देवानांप्रिय' (देवताओं का प्रिय) कहा जाता है। उन्होंने न केवल युद्धों से बल्कि 'धम्म' (धर्म) के माध्यम से भी विश्व पर विजय प्राप्त की।
- सर्वप्रथम **मास्की लेख** में अशोक का नाम पढ़ा गया।
- अशोक महान ने श्रीनगर की स्थापना की।
- अशोक अपने प्रारम्भिक जीवन में भगवान शिव का उपासक था।

कलिंग युद्ध

- मगध के पड़ोस में कलिंग शक्तिशाली राज्य था।
- अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में 261 ई.पू. में अशोक ने कलिंग के साथ युद्ध किया था।
- यह सूचना अशोक के 13वें बड़े शिलालेख से मिलती है।
- युद्ध की विभीषिका और खून-खराबे को देखकर अशोक का मन ग्लानि से भर गया। उन्होंने हमेशा के लिए युद्ध का त्याग कर दिया और **'भेरी घोष'** (युद्ध की घोषणा) के स्थान पर **'धम्म घोष'** को अपनाया

▪ **अशोक के शिलालेख (Edicts)**

अशोक पहले ऐसे भारतीय शासक थे जिन्होंने प्रजा को शिलालेखों के माध्यम से सीधे संबोधित किया।

लिपियाँ: इनके शिलालेख **ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरमाइक और ग्रीक** लिपियों में मिलते हैं।

खोज: 1750 ई. में टी. फेन्थेलर ने इन्हें खोजा, लेकिन सबसे पहले **जेम्स प्रिंसेप** ने 1837 ई. में इन्हें पढ़ने में सफलता प्राप्त की।

मध्यकालीन भारत

अध्याय – I

अरब आक्रमण

- **मध्ययुगीन भारत**, "प्राचीन भारत" और "आधुनिक भारत" के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की लम्बी अवधि को दर्शाता है।
- पाल राजा धर्मपाल, जो गोपाल के पुत्र थे, ने आठवीं शताब्दी ए.डी. से नौवी शताब्दी ए.डी. के अंत तक शासन किया।
- **धर्मपाल द्वारा नालन्दा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना इसी अवधि में की गई।**
- **भारत और अरब के बीच 7वीं सदी में ही संपर्क आरम्भ हो गये थे। लेकिन राजनीतिक संबंध 712 ई. में सिंध पर आक्रमण के दौरान स्थापित हुआ।**
- गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट, चालुक्यों की प्रतिष्ठा की स्थापना उनके द्वारा अरबों का विरोध करने के कारण हुई। **अरबों का दीर्घकालिक महत्व यह था कि उन्होंने भारत में धर्म की स्थापना न करके धार्मिक सहिष्णुता का प्रदर्शन किया। हालांकि जजिया कर लिया जाता था।**
- **अरबों का भारत पर पहला आक्रमण खलीफा उमर के काल में 636 ई. में बम्बई के थाना पर हुआ जो कि असफल रहा।**
- **अरबों का भारत का प्रथम सफल अभियान 712 ई. में मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में हुआ।**
- मुहम्मद-बिन-कासिम ने दाहिर को हराकर 'सिन्ध' पर कब्जा कर लिया।
- कासिम ने 'मुल्तान' पर भी कब्जा कर लिया तथा इसका नाम सोने का शहर रखा।
- मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध में **जजिया कर** लागू किया, जो गैर-मुस्लिमों से लिया जाता था।
- अब्बासी खलीफाओं ने बगदाद (इराक) को अरब जगत की राजधानी घोषित किया।
- खलीफा हारून रशीद ने चरक संहिता का अरबी अनुवाद कराया।
- अरबों ने अंक, दशमलव तथा गणित के सिद्धांतों को सीखा।
- मोहम्मद बिन कासिम

मुहम्मद बिन कासिम के प्रमुख अभियान

- सिंध विजय के बाद जजिया लागू किया गया।"
- देबल के बाद कासिम ने नीरून, सेहवान एवं सिसम पर सफल आक्रमण किया।
- सिसम जीतने के बाद कासिम ने राबर जीता। राबर में दाहिर लड़ता हुआ मारा गया। उसकी मृत्यु के बाद उसकी पत्नी रानीबाई ने अरबों के खिलाफ मोर्चा संभाला। परन्तु, स्वयं को हारते देखकर उसने जौहर कर लिया।
- अलोर या अरोर ब्राह्मणवाद के बाद दाहिर की राजधानी अलोर को जीता गया। **अरोर विजय ही सिन्ध विजय को पूर्णता प्रदान करता है ।**
- मुल्तान कासिम की अंतिम विजय थी। यहाँ से उसे इतना सारा सोना मिला की मुल्तान का नाम सोन का नगर (स्वर्ण नगर) रखा गया।
- सिन्ध विजय के पश्चात् कासिम ने ब्राह्मणों को ऊँचे पदों पर नियुक्त किया था।
- मुल्तान विजय के उपरान्त कासिम ने कन्नौज विजय हेतु अबु-हकीम के अधीन एक सेना भेजी। परन्तु, **अरब आक्रमणकारी सिन्ध के आगे नहीं बढ़ पायें क्योंकि कश्मीर के ललितादित्य ने इन्हें हराकर इनका प्रसार आगे की ओर रोक दिया।**
- **725 ई. में जब अरबों ने पुनः सिन्ध से आगे बढ़ने की कोशिश की तब गुर्जर-प्रतिहारों एवं बादामी के चालुक्यों ने उनको पराजित किया। यही कारण है कि अरब यात्री सुलेमान ने प्रतिहार शासक मिहिरभोज को अरब मुसलमानों का सबसे बड़ा शत्रु बताया**

महमूद गजनवी

- भारत में तुर्कों का आक्रमण दो चरणों में सम्पन्न हुआ।
- प्रथम चरण का महमूद गजनवी तो दूसरे का मोहम्मद गौरी था।
- अरबों के बाद तुर्कों ने भारत पर आक्रमण किया। तुर्क चीन की उत्तरी-पश्चिमी सीमाओं पर निवास करने वाली असभ्य एवं बर्बर जाति थी।
- अलप्तगीन नामक एक तुर्क सरदार ने गजनी में स्वतन्त्र तुर्क राज्य की स्थापना की।
- अलप्तगीन के गुलाम तथा दामाद सुबुक्तगीन ने 977 ई. में गजनी पर अपना अधिकार कर लिया।
- महमूद गजनवी सुबुक्तगीन का पुत्र था।
- अपने पिता के काल में महमूद गजनवी खुरासान का शासक था।
- सुबुक्तगीन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी महमूद गजनवी गजनी की गद्दी पर 998 ई. में बैठा।
- 1010 ई. में महमूद ने नगरकोट को लूटा तथा 1010 ई. में तलवाड़ी युद्ध में हिन्दुओं के संघ को परास्त किया।
- 1014 ई. में थानेश्वर के चक्रस्वामी मंदिर को लूटा।
- 1015 ई. में कश्मीर में लोहको (लोहारिन) दुर्ग जीतने का असफल प्रयास किया। यह गजनवी की सेना की प्रथम पराजय थी जिसका मुख्य कारण प्रतिकूल मौसम था। इसके पश्चात उसने 1021 ई. में भी कश्मीर को जीतने का असफल प्रयत्न किया था।
- 1019 ई. में महमूद ने कालिंजर दुर्ग का घेरा डाला । क्योंकि, यहाँ के शासक विद्याधर चन्देल)इसे मुस्लिम लेखकों ने सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया है।
- कन्नौज के नये शासक त्रिलोचनपाल एवं पंजाब के शाही शासक त्रिलोचनपाल के साथ मिलकर एक संघ का निर्माण किया था। इस संघ का प्रमुख विद्याधर था।

- महमूद गजनवी ने ग्वालियर)कालिंजर) के दुर्ग का घेरा ड़ाला, लेकिन निर्णायक शक्ति परीक्षण न हो सका। विद्याधर ही वह चन्देल शासक था जो महमूद से पराजित नहीं हुआ और दोनों के बीच संधि हो गयी।
- 1025 ई. में गुजरात के सोमनाथ मंदिर पर महमूद का आक्रमण हुआ । समकालीन चालुक्य शासक भीम प्रथम था गजनवी के चले जाने के बाद इस मंदिर का पुनर्निमाण करवाया।
- 1027 ई. में सिन्ध के जाटों को दण्ड देने हेतु वह भारत आया। 1030 ई. में महमूद गजनवी की मृत्यु हो गयी।

☞ मुहम्मद गौरी

- मुहम्मद गौरी शंसबनी वंश का था। मुहम्मद गौरी का पूरा नाम शाहबुद्दीन मुहम्मद गौरी था। ग्यासुद्दीन मुहम्मद गौरी इसका बड़ा भाई था। ग्यासुद्दीन मुहम्मद गौरी ने 1163 ई. में गोर को राजधानी बनाकर स्वतंत्र राज्य स्थापित कराया।
- यहीं वह शाहबुद्दीन उर्फ मुईजुद्दीन मोहम्मद गौरी था जिसने 12वीं सदी में भारत पर आक्रमण किया। मोहम्मद गौरी ने सर्वदा अपने बड़े भाई ग्यासुद्दीन का सम्मान किया और एक स्वतंत्र शासक होते हुए भी स्वयं को उसके अधीन माना।
- 1203 ई. में ग्यासुद्दीन की मृत्यु केपश्चात् मोहम्मद गौरी ने एक स्वतंत्र शासक के रूप में मुइजुद्दीन की उपाधि धारण की तथा गोर को राजधानी बनाया ।
- 1205 ई. में मुहम्मद गौरी ख़्वारिज़्म के शासक से बुरी तरह पराजित हुआ। अफवाह यह थी कि गौरी युद्ध के मैदान में मारा गया था। इस खबर को सुनकर झेलम और चिनाब मध्यवर्ती क्षेत्र के खोखरिया ने विद्रोह कर दिया। इससे हालात बिगड़ गए। लेकिन गौरी ने हार नहीं मानी और कुतुबुद्दीन ऐबक की मदद से वह खोखरियाकों का दमन करने में सफल रहा।
- मुहम्द बिन कासिम के बाद महमूद गजनवी तथा उसके बाद मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण किया तथा कत्लेआम कर लूटपाट मचाई। भारत में तुर्क साम्राज्य का श्रेय मुहम्द गौरी को दिया जाता है।
- मुहम्मद गौरी गजनी तथा हेरात के मध्य स्थित एक छोटे से पहाड़ी क्षेत्र गजनी का शासक था।
- 12वीं शताब्दी के मध्य में गौरी वंश का उदय हुआ। गौरी वंश की नींव अलाउ-द्दीन जहांसोज ने रखी थी। जहांसोज की मृत्यु के बाद उसके पुत्र सैफ-उद-द्दीन गौरी के सिंहासन पर बैठा।
- गौरी साम्राज्य का आधार उत्तर-पश्चिम अफगानिस्तान था । प्रारंभ में गौरी गजनी के अधीन था।
- 1173 ई. में ग्यासुद्दीन ने अपने छोटे भाई मुहम्मद गौरी को गोर का क्षेत्र सौंप दिया तथा स्वंय गजनी पर अधिकार कर ख्वारिज्म के विरुद्ध संघर्ष शुरू कर दिया।
- मुहम्मद गौरी ने भारत की ओर प्रस्थान कर दिया । मुहम्द गौरी एक अफगान सेनापति था। यह एक महान विजेता था तथा सैन्य संचालक भी था।

प्रमुख आक्रमण और युद्ध (समीक्षा)

- **गुजरात अभियान (1178 ई.):** यह तथ्य सही है कि गौरी की भारत में पहली पराजय गुजरात में हुई थी।
  - **सुधार:** मूलराज द्वितीय (या भीम द्वितीय) की माता का नाम **नायिका देवी** था, जिन्होंने इस युद्ध का नेतृत्व किया था। वे मूलराज की माता (संरक्षिका) थीं, पत्नी नहीं। इसे **'कायदरा का युद्ध'** भी कहा जाता है।
- **तबरहिंद (भटिंडा):** यह तथ्य बिल्कुल सही है कि तबरहिंद पर अधिकार को लेकर ही पृथ्वीराज और गौरी के बीच विवाद शुरू हुआ, जो तराइन के युद्ध का कारण बना।
- **तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.):** यह बिल्कुल सही है। पृथ्वीराज चौहान ने गौरी को हराया लेकिन उसे जीवित जाने दिया, जो बाद में एक रणनीतिक भूल साबित हुई।
- **तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.):** यह भारत के इतिहास का निर्णायक मोड़ था। यहाँ से भारत में मुस्लिम शासन की नींव पड़ी।

☞ पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु

आपने 'पृथ्वीराज रासो' (चंद्रबरदाई) का संदर्भ दिया है, जो एक महत्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत है:

- **साहित्यिक मत:** चंद्रबरदाई के अनुसार 'शब्दभेदी बाण' वाली घटना सही है।
- **ऐतिहासिक साक्ष्य:** अधिकांश इतिहासकार (जैसे हसन निजामी) और उस समय के सिक्के यह संकेत देते हैं कि युद्ध के बाद पृथ्वीराज ने कुछ समय के लिए गौरी के अधीन अजमेर में शासन किया था, लेकिन बाद में विद्रोह के संदेह में उनकी हत्या कर दी गई।

सेनापति और अन्य अभियान

- **बख्तियार खिलजी:** इसने नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों को नष्ट किया था।
  - **सुधार:** आपने लिखा है कि 1206 में अलिमर्दान ने "मोहम्मद गौरी" की हत्या की। वास्तव में, अलिमर्दान खिलजी ने **बख्तियार खिलजी** की हत्या की थी, न कि गौरी की।
- **कालिंजर विजय (1203 ई.):** ऐबक ने चंदेल शासक परमर्दिदेव को हराकर कालिंजर जीता, यह तथ्य एकदम सही है।

गौरी की मृत्यु और सिक्के

- **लक्ष्मी प्रकार के सिक्के:** यह एक बहुत ही रोचक और सही तथ्य है। गौरी ने जो सिक्के चलाए उन पर एक ओर **देवी लक्ष्मी** की आकृति और दूसरी ओर देवनागरी लिपि में उसका नाम (श्री मुहम्मद बिन साम) अंकित था।
- **गौरी की मृत्यु (1206 ई.):** जब गौरी खोखरों को दबाकर वापस गजनी लौट रहा था, तब **दम्यक** (वर्तमान पाकिस्तान) नामक स्थान पर शाम की नमाज पढ़ते समय उसकी हत्या कर दी गई थी।

अध्याय – 3

मुग़ल काल

- राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह-अफगान, राजपूत, दक्कनी राज्य और मराठा
- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया, जिसमें लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की - दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलटकर रख दिया और मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी। **गुप्त वंश के पश्चात् मध्य भारत में केवल मुग़ल साम्राज्य ही ऐसा साम्राज्य था, जिसका एकाधिकार हुआ था।**
- **मुग़ल वंश का संस्थापक बाबर था,** अधिकतर मुग़ल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे, **मुग़ल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।**

☞ बाबर का शासन काल (1526 – 1530 ई.)

- बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज़्बेकिस्तान का हिस्सा है।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। **बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था।**
- **पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।**
- **खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।**
- **चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदिनी राय और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई।
- **घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई।
  नोट :- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया।
- **उसकी विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।**
- पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए 'उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों 'को (दिल्ली शासकों) सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर **अपने आप को 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।**
- **पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्त्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था। जिसमें विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण** की थी। इस युद्ध के लिए **अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था।**
- साथ ही **मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी,** यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था। राजपूतों के विरुद्ध इस 'खानवा के युद्ध का प्रमुख कारण बाबर द्वारा भारत में ही रुकने का निश्चय था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- इसके बाद बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुक-ए- बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चगताई तुर्की में लिखा है।
- इसमें बाबर ने तत्कालीन भारतीय दृशा का विवरण दिया है, जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।
- **बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है।** साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।
- बाबर ने 'रिसाल-ए-उसज' की रचना की थी, उसकी विशिष्ट लेखन-शैली (कैलीग्राफी) को कहा जाता है। बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था। साथ ही बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे प्रारम्भ में **"बाग-ए-गुल अफशां"** कहा गया , जिसे वर्तमान में **'आरामबाग'** के नाम से जाना जाता है। इसमें **चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है।**
- यहीं पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।

☞ हुमायूँ (1530 ई. - 1556 ई.)

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुग़ल वंश के शासन पर बैठा।
- हुमायूँ ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।

- **हुमायूँ का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी अफगान नेता शेर खां था, जिसे शेरशाह शूरी भी कहा जाता है।**
- हुमायूँ का अफगानों से **पहला मुकाबला 1532 ई. में दौहरिया 'नामक स्थान पर** हुआ। इसमें **अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। इस संघर्ष में हुमायूँ सफल रहा।**
- 1532 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में दीन पनाह' नामक नगर की स्थापना की।
- 1535 ई. में ही उसने बहादुर शाह को हराकर गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की।
- शेर खां की बढ़ती शक्ति को दबाने के लिए हुमायूँ ने 1538 ई. में चुनारगढ़ के किले पर दूसरा घेरा डालकर उसे अपने अधीन कर लिया।
- 1538 ई. में हुमायूँ ने बंगाल को जीतकर मुग़ल शासक के अधीन कर लिया। बंगाल विजय से लौटते समय 26 जून, 1539 को चौंसा के युद्ध में शेर खां ने हुमायूँ को बुरी तरह पराजित किया।
- शेर खां ने 17 मई, 1540 को बिलग्राम के युद्ध में पुनः हुमायूँ को पराजित कर दिल्ली पर बैठा। हुमायूँ को मजबूर होकर भारत से बाहर भागना पड़ा।
- 1545 ई. में हुमायूँ ने कामरान से काबुल और गंधार छीन लिया।
- 15 मई, 1555 को मच्छीवाड़ा तथा 22 जून, 1555 को सरहिन्द के युद्ध में सिकन्दर शाह सूरी को पराजित कर हुमायूँ ने दिल्ली पर पुनः अधिकार लिया।
- 23 जुलाई, 1555 को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ, परन्तु अगले ही वर्ष 27 जनवरी, 1556 ई. को पुस्तकालय की सिढ़ियों से गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गयी।
- **लेनपूल ने हुमायूँ पर टिप्पणी करते हुए कहा, "हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए उसने अपनी जान दे दी।"**
- बैरम खां हुमायूँ का योग्य एवं वफादार सेनापति था, जिसने निर्वासन तथा पुनः राज सिंहासन प्राप्त करने में हुमायूँ की मदद की।

☞ शेरशाह सूरी (1540 ई. - 1545 ई.)

- **बिलग्राम के युद्ध में हुमायूँ को पराजित कर 1540 ई. में 67 वर्ष की आयु में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।** इसने मुग़ल साम्राज्य की नींव उखाड़ कर भारत में अफगानों का शासन स्थापित किया।
- इसके बचपन का नाम फरीद था। शेरशाह का पिता हसन खां सासाराम (बिहार) एक जागीरदार था।
- **1539 ई. में बंगाल के शासक शासक** ग़ियासुद्दीन महमूद शाह **को पराजित करने के बाद शेर खां ने 'हजरत-ए-आला' की उपाधि धारण की ।**
- शेर खाँ ने एक बार अकेले शेर मारने पर (बिहार के शासक बहार खाँ लोदी की सेवा में रहते समय) **"शेर खान"** की उपाधि पाईथी।
- चौंसा युद्ध **(26 जून 1539)** के बाद उसने **"शेरशाह" (राजकीय उपाधि)** धारण की।
- 1540 में दिल्ली की गद्दी पर बैठने के बाद शेरशाह ने सूरवंश अथवा द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना की।
- शेरशाह ने अपनी उत्तरी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए 'रोहतासगढ़' नामक एक सुदृढ़ **किला बनवाया।**
- **1544 ई. में शेरशाह ने मारवाड़ के शासक मालदेव पर आक्रमण किया ।** इसमें उसे बड़ी मुश्किल से सफलता मिली। **इस युद्ध में राजपूत सरदार' जैता 'और' कुप्पा' ने अफगान सेना के छक्के छुड़ा दिए।**
- 1545 ई. में शेरशाह ने कालिंजर के मजबूत किले का घेरा डाला, जो उस समय कीरत सिंह के अधिकार में था, परन्तु 22 मई 1545 को बारूद के ढ़ेर में विस्फोट के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।
- प्रसिद्ध ग्रैंड ट्रंक रोड (पेशावर से कलकत्ता) की मरम्मत, करवाकर व्यापार और आवागमन को सुगम बनाया।
- शेरशाह का मकबरा बिहार के सासाराम में स्थित है, जो मध्यकालीन कला का एक उत्कृष्ट नमूना है।
- शेरशाह की मृत्यु के बाद भी सूर वंश का शासन 1555 ई. में हुमायूँ द्वारा पुनः दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने तक कायम रहा ।

☞ अकबर (1556 – 1605 ई.)

हुमायूँ की मृत्यु (27 जनवरी 1556) के बाद उसके पुत्र **जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर** का राज्याभिषेक **14 फरवरी 1556 ई.** को पंजाब के **कलानौर** में हुआ।

- उस समय अकबर की आयु लगभग **13 वर्ष** थी।
- अकबर का जन्म **15 अक्टूबर 1542 ई.** को **अमरकोट (वर्तमान उमरकोट, सिंध)** में हुआ।
- उस समय अमरकोट के शासक **राणा वीरसाल (वीरमाल नही)** थे, जिन्होंने निर्वासित हुमायूँ को शरण दी थी।

1. प्रारम्भिक प्रशासन और बैरम खाँ

- प्रारम्भ में अकबर अल्पायु था, इसलिए **1556-1560 ई. तक शासन बैरम खाँ के संरक्षकत्व (Regency)** में चला।
- बैरम खाँ को **वकील-ए-सुल्तानत (प्रधान संरक्षक/प्रधान मंत्री जैसा पद)** बनाया गया।
- **खान-ए-खाना** की उपाधि अकबर ने नहीं दी थी; यह उपाधि बाद में अब्दुर्रहीम खानखाना (बैरम खाँ के पुत्र) से संबंधित है।

2. द्वितीय पानीपत का युद्ध (1556)

- **5 नवम्बर 1556** को पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर की सेना (वास्तव में बैरम खाँ के नेतृत्व में) का सामना **हेमू (हेमचन्द्र विक्रमादित्य)** से हुआ।
- हेमू अफगान शासक **मुहम्मद आदिल शाह सूरी** का सेनापति था।
- युद्ध में हेमू पराजित हुआ और बाद में उसकी मृत्यु हो गई।
- इस विजय से भारत में मुगल सत्ता पुनः स्थापित हुई।

प्रश्न-4. पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक थे?

A. मध्वाचार्य
B. निंबार्क
C. वल्लभाचार्य
D.चैतन्य महाप्रभु

उत्तर-C

प्रश्न-5. बुद्ध और मीरा बाई के जीवन दर्शन में मुख्य साम्य में था?

A. अहिंसा व्रत का पालन
B. सत्य बोलना
C. निर्वाण के लिए तपस्या
D. संसार दुःख पूर्ण है।

उत्तर-D

प्रश्न-6. "अलवार" भक्ति परम्परा के स्त्री भक्त का नाम हैं?

A. पंडाल
B. कंडाल
C. आण्डाल
D. इंडाल

उत्तर-C

प्रश्न-7. संत कवि आलवारों के आराध्य देव हैं?

A. शिव
B. विष्णु
C. कृष्ण
D. राम

उत्तर-B

प्रश्न-8. 'बीजक' किसके द्वारा रचित हैं?

A. सूरदास
B. तुलसीदास
C. कबीरदास
D. कबीर

उत्तर-D

प्रश्न-9. सूफी अनुयायियों को कहा जाता था?

A. मुरीद
B. पीर
C. वारिस
D. शेख

उत्तर-A

प्रश्न-10. मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का उद्भव कहाँ और किसके द्वारा हुआ?

A. उत्तर भारत के संतो द्वारा
B. दक्षिण भारत के आलवार संतो के द्वारा
C. पश्चिमी भारत में लोक देवताओं के द्वारा
D. इनमें से कोई नहीं

उत्तर-B

मुख्य परीक्षा

1. **मध्यकालीन भारत में निर्गुण भक्ति की समृद्ध परंपरा थी, स्पष्ट कीजिए।**

आधुनिक भारत का इतिहास

(प्रारम्भिक 19वीं शताब्दी से 1965 तक)

अध्याय – 1

आधुनिक भारत का विकास

- **यूरोपीय कम्पनियों का आगमन**
  भारत में आने वाली यूरोपीय कम्पनियों का क्रम
  पुर्तगाली→डच→ब्रिटिश→डेनिश→फ्रांसीसी→स्वीडस

वास्को-डी-गामा

- यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कम्पनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया। **भारत में आने के लिए इन्होंने नये समुद्री मार्ग की खोज की।** पुर्तगाली व्यापारी वास्को-डी-गामा ने 17 मई 1498 में भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पहुँचकर की। बन्दरगाह पर कथडाबू नामक स्थान पर पहुँचा।
- वास्को-डी-गामा का स्वागत कालीकट के शासक जमोरिन ने किया। **पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत एवं यूरोप के मध्य व्यापार के क्षेत्र में एक नये युग का सूत्रपात हुआ।**
- भारत आने और जाने में हुए यात्रा व्यय के बदले में उसने 60 गुना अधिक धन कमाया। धीरे – धीरे अन्य पुर्तगाली व्यापारी भारत में आने लगे भारत में कालीकट, गोवा, दमन दीव और हुगली के बन्दरगाहों पर पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक कोठियां स्थापित की
  नोट :- पेड्रो अब्रेज केब्रोल भारत पहुँचने वाला दूसरा पुर्तगाली था।
  1502 ई. में वास्को-डी-गामा पुनः भारत आया था।
- पुर्तगाली :- **1503 में पुर्तगालियों ने अपनी पहली फैक्ट्री कोचीन में स्थापित की थी।**
- दूसरी फैक्ट्री की स्थापना 1505 ई. में कन्नूर में की गई।

☞ **फ्रांसिस्को डी. अल्मोड़ा [1505 – 1509]**

- **यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर / वायसराय बनकर आया था।** इसने 1509 1509 ई. में दीव के समुद्री युद्ध में पुर्तगालियों ने मिस्र, तुर्की और गुजरात की संयुक्त नौसेना को पराजित किया।इसे पुर्तगाली सरकार ने आदेश दिया था कि यह भारत में ऐसे दुर्ग का निर्माण करे जिनका उद्देश्य बस केवल सुरक्षा न होकर हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगाली नियंत्रण स्थापित करना भी हो **(उसके द्वारा अपनाई नीति नीले या शांत जल की नीति कहलाई)**
- **यह पॉलिसी हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगीज नियंत्रण स्थापित करने के लिए अल्मेडा ने शुरु की थी।**
- पुर्तगाल की राजधानी –लिसवन

☞ **अल्फांसो डी. अल्बुकर्क (1503 – 1515)**

भारत में पुर्तगाली शक्ति की वास्तविक नींव डालने वाला अल्फांसो डी. अल्बुकर्क था।

- जो सर्वप्रथम 1503 ई. में भारत आया और उसी समय उसने कोचीन में पुर्तगालियों के प्रथम - दुर्ग का निर्माण करवाया।
- 1509 ई. में अल्बुकर्क भारत में पुर्तगालियों का गवर्नर नियुक्त हुआ।
- 1510 ई. पुर्तगालियों ने गोवा के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया, जो उस समय बीजापुर के यूसुफ आदिल शाह सुल्तान के अधीन था।
- **1511 ई. में अल्बुकर्क ने मलक्का और 1515 ई. में फारस की खाड़ी में अवस्थित हर्मुज बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया ।**
- अल्बुकर्क ने अपने क्षेत्र में **सती प्रथा बन्द करवा दी।**
- **अल्बुकर्क राजा राममोहन राय का पूर्व गामी था।**
- पुर्तगीजों को भारतीय स्त्रियों से विवाह के लिए अल्बुकर्क ने प्रोत्साहित किया ।
- अल्बुकर्क ने पुर्तगीज सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की।

☞ **नीनो डी. कुन्हा (1529-1538)**

अल्बुकर्क के बाद सबसे प्रभावशाली पुर्तगाली गवर्नर नीनो डी. कुन्हा था। जिसने 1529 ई. में भारत में कार्य भार ग्रहण किया ।

- **कुन्हा ने 1530 ई. में शासन का प्रमुख केन्द्र कोचीन के स्थान पर गोवा को बनाया।**
- कुन्हा ने दमन, सालसेट, चौल, बम्बई सेन्टटॉमस, मद्रास और हुगली में पुनः अपने केन्द्र स्थापित किये।
- कुन्हा ने हुगली और सैनथोमा मद्रास के पास पुर्तगाली बस्तियों को स्थापित किया ।
- **भारत में प्रथम पादरी फ्रांसिस्को जेवियर का आगमन पुर्तगाली गवर्नर मार्टिन डिसूजा 1542-1545 के समय हुआ ।**
- पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर से होने वाले आयात निर्यात पर एकाधिकार स्थापित कर लिया ।
- मुग़ल शासक अकबर के दरबार में दो पुर्तगाली इसाई पादरियों मोंसरेट तथा फादर एकाबिवा का आगमन हुआ ।
- **भारत में तम्बाकू की खेती, जहाज निर्माण एवं तथा प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत पुर्तगालियों के आगमन के पश्चात् हुई ।**
- **पुर्तगालियों ने ही सन् 1556 में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की ।**
- 1661 ई. में तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट (अंग्रेज) चार्ल्स द्वितीय ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह कर लिया और पुर्तगालियों ने चार्ल्स द्वितीय को मुम्बई द्वीप दहेज में दे दिया।
- नीनो डी कुन्हा के समय की एक बड़ी घटना गुजरात के शासक **बहादुर शाह** की मृत्यु (1537) थी, जो पुर्तगालियों के साथ जहाज पर बातचीत के दौरान समुद्र में डूबने से हुई थी।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- बंगाल के शासक '**गियासुद्दीन महमूद शाह** (Ghiyasuddin Mahmud Shah)' द्वारा पुर्तगालियों को चटगाँव और सतगाँव में व्यापारिक कम्पनियाँ खोलने की अनुमति दी गई।
- 'अकबर' की अनुमति से हुगली में कम्पनी की स्थापना की गई ।
- शाहजहाँ ने पुर्तगालियों के अधिकार से 'हुगली' को छीन लिया था।

कार्टज आर्मेडा काफिला व्यवस्था :- यह समुद्री व्यापार पर नियंत्रण व्यवस्था थी। इसके अन्तर्गत कोई भी भारतीय या अरबी जहाज बिना 'परमिट' लिए अरब सागर में नहीं जा सकता था।

इन जहाजों में **काली मिर्च व गोला बारूद ले जाना मना था।**

पुर्तगालियों के पतन के कारण

- पुर्तगालियों का भ्रष्ट शासन, दोषपूर्ण व्यापार प्रणाली, धार्मिक और वैवाहिक नीति, योग्य शासकों का अभाव, स्पेन द्वारा पुर्तगाल का विलय, डचों का प्रवेश एवं सैन्य चुनौती आदि पुर्तगालियों के पतन के कारण बनें ।

पुर्तगालियों की भारत को देन

- **मध्य अमेरिका से तम्बाकू, मूंगफली, आलू, मक्का, पपीता और अमरुद का भारत में प्रवेश पुर्तगालियों ने कराया।**
- बादाम, लीची, संतरा, अनानास एवं काजू का प्रवेश अन्य देशों से भारत में पुर्तगालियों के माध्यम से हुआ।
- जहाज निर्माण तथा प्रिंटिंग प्रेस (1556 ई.) की स्थापना भारत में पुर्तगालियों ने प्रारम्भ की।
- **पुर्तगालियों द्वारा भारत में गोथिक स्थापत्य कला का आगमन हुआ।**

☞ **डच**

- डच पुर्तगालियों के बाद भारत आये।
- डच नीदरलैण्ड व हॉलैण्ड के निवासी थे।
- डचों की कम्पनी का नाम यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कम्पनी ऑफ नीदरलैण्ड था, की स्थापना 1602 में की थी। वास्तविक नाम वेरीगीडे ओस्त इन्डिशे कम्पनी था ।
- **डचों ने भारत में अपनी "प्रथम फैक्ट्री" 1605 ई. में मसूली पट्टनम में स्थापित की ।**
- डचों का भारत में प्रथम दल "कार्नेलियस डी हाउटमैन के नेतृत्व में भारत आया । वह भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक था ।
- डचों नें 1602 ई. में कंपनी स्थापित की लेकिन लेकिन गुजरात (सूरत - 1616) और बंगाल (पीपली - 1627) में फैक्ट्रियाँ बाद के वर्षों में व्यापारिक फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।
- डचों ने मसूली पट्टनम, पुलीकट, सूरत, कराइकल, बालासोर, नागपट्टनम और कोचीन में कोठियाँ खोली ।
- डचों ने बंगाल में पहली फैक्ट्री '1627' में पीपली - (स्थाई कम्पनी) में स्थापित की।
- **'1653' में डचों ने हुगली के निकट चिनसुरा में अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।**

अध्याय – 4

स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन

1945 -1947 के बीच का भारत

- वैवेल योजना - जून 1945
- आजाद हिंद फौज एवं लाल किला मुकदमा – नवम्बर 1945
- शाही भारतीय नौसेना विद्रोह –फरवरी 1946
- कैबिनेट मिशन – मार्च 1946
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली की घोषणा – 20 फरवरी 1947
- माउंटबेटन योजना – 3 जून 1947

वैवेल योजना (1945) –वायसराय वैवेल ने 1945 में एक राजनीतिक सुधार की योजना प्रस्तुत की जिसे वेवेल योजना के नाम से जाना जाता है।

- **इस योजना के अनुसार वायसराय के कार्यकारिणी का पुर्नगठन किया जाना था। इस उद्देश्य से राजनीतिक नेताओं को जेल से रिहा किया गया और जून 1945 में शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया।**
- ब्रिटिश सरकार इन राजनीतिक सुधारों के लिए इसलिए उत्साहित थी कि 1945 में इंग्लैण्ड में चुनाव होने वाले थे और वहाँ की सरकार यह प्रदर्शित करना चाहती थी कि वह भारत में समस्या समाधान के प्रति गंभीर है।

वैवेल योजना के अंतर्गत निम्नलिखित प्रावधान रखे गए :

(i) वायसराय एवं कमांडर-इन चीफ को छोड़कर वायसराय की कार्यकारिणी के सभी सदस्य भारतीय होंगे और परिषद् में हिंदू मुसलमानों की संख्या बराबर रखी जाएगी।

(ii) वायसराय वीटो पावर के प्रयोग का प्रयास नहीं करेगा।

- इस योजना के संदर्भ में मुस्लिम लीग चाहती थी कि उसे ही भारत मुसलमानों का एक मात्र दल माना जाए वायसराय की कार्यकारिणी में मुस्लिम लीग के बाहर का कोई मुसलमान नहीं होना चाहिए। कांग्रेस के संभावित मुस्लिम प्रतिनिधियों में **मौलाना अबुल कलाम आजाद** प्रमुख थे।**खान अब्दुल गफ्फार खान** कार्यकारिणी के लिए कांग्रेस की आधिकारिक सूची में सामान्यतः शामिल नहीं माने जाते।
- जिसका जिन्ना ने विरोध किया। अतः वायसराय वैवेल ने जिन्ना की आपत्ति देखते हुए सम्मेलन को असफल घोषित कर समाप्त कर दिया।
- कांग्रेस ने जिन्ना के मत को इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से कांग्रेस एक साम्प्रदायिक दल अर्थात् हिंदू दल के रूप में जाना जाता और भारत के मुसलमानों का एकमात्र दल मुस्लिम लीग को माना जाता । इससे मुस्लिम लीग की भारत विभाजन की माँग और मजबूत हो जाती।

आजाद हिन्द फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना-INA)

- **INA की स्थापना 1942 में मोहन सिंह ने की थी।** जापानी मेजर फूजीवारा ने मोहन सिंह को इसके गठन का सुझाव दिया था। उन्होंने मोहन सिंह से कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए जापानियों के साथ मिलकर कार्य करें ।
- वस्तुतः मोहन सिंह ब्रिटिश सेना में एक भारतीय सैन्यअधिकारी थे और जब ब्रिटिश सेना दक्षिण पूर्व एशिया से पीछे रह रही थी तो मोहन सिंह जापानियों के साथ हो गए। इसी क्रम में। सितम्बर 1942 को मोहन सिंह के अधीन मलाया में INA का गठन हुआ।
- **INA का दूसरा चरण उस समय आया जब सुभाष चन्द्र बोस 2 जुलाई 1943 में सिंगापुर पंहुचे और वहां से उन्होंने "दिल्ली चलो" का नारा दिया ।** यहाँ क्रांतिकारी नेता रास बिहारी बोस ने उन्हें सहयोग दिया। अतः सुभाष चन्द्रबोस ने 21 अक्टूबर 1943 आजाद हिंद फौज के नाम से एक अस्थायी सरकार का गठन किया। इसका मुख्यालय सिंगापुर के साथ-साथ रंगून(म्यांमार) में भी बनाया गया ।
- बोस की सरकार ने Uk और USA के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और गाँधी, नेहरू एवं सुभाष नामक सैन्य टुकड़ी का गठन किया तो **महिलाओं के लिए रानी झाँसी रेजिमेंट का गठन किया ।**
- 6 जुलाई 1944 में सुभाष चन्द्र बोस ने एक रेडियो संदेश में कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतिम युद्ध शुरू हो चुका हमारे राष्ट्रपिता भारतीय स्वतंत्रता के इस युद्ध में हमें आपका आशीर्वाद चाहिए।
- शहनवाज खान के नेतृत्व में INA की सैन्य टुकड़ी जापानियों के साथ मिलकर भारत - बर्मा सीमा पर हमला करने के लिए इंफाल भेजी गयी किंतु जब जापानियों की विश्व युद्ध में पराजय होने लगी तब उनके साथ-साथ आजाद हिंद फौज के सैनिकों को भी आत्मसमर्पण करना पड़ा और उन पर मुकदमा चला।

लाल किला मुकदमा (नवम्बर 1945):

- आजाद हिंद फौज के बंदी सैनिकों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा लाल किले में मुकदमा चलाया गया। फ़ौज के शाहनवाज खान, गुरुबख्श सिंह ढिल्लो एवं प्रेम कुमार सहगल को एक ही कठघरे में खड़ा किया गया।
- नेहरू ने सरकार से इन गुमराह देश भक्तों के प्रति उदारता दिखाने की अपील की। इसी क्रम में कांग्रेस ने सैनिकों के बचाव हेतु एकआजाद हिंद फौज समिति का गठन किया।
- लाल किले मुकदमे में बचाव पक्ष का नेतृत्व 'भूलाभाई देसाई' कर रहे थे। नेहरू ने इस मुकदमे के दौरान 25 वर्ष पश्चात् काली कोट पहनी।
- लाल किले मुकदमे के संदर्भ में कैदियों को सभी राजनीतिक दलो जैसे - कांग्रेस, मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी आदि का समर्थन प्राप्त था। मुकदमे के दौरान जनता ने सक्रिय भूमिका निभायी देश भर में हड़ताल और प्रदर्शन का आयोजन किया गया। समाचार पत्रों में लेख लिखे गए।
- **5-11 नवम्बर 1945** को कई स्थानों पर **INA Week** मनाया गया।तथा **12 नवम्बर 1945 को आजाद हिंद दिवस मनाया गया।**

- इसी तरह **अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में इन युद्ध बंदियों को रिहा करने की मांग की गयी।** साथ ही, सरकारी कर्मचारी एवं सेना के लोग भी सरकार के विरुद्ध हो गए। वे सरकार विरोधी सभाओं में जाते थे और चंदा भी देते थे।
- मुकदमे के संदर्भ में आंदोलन में भारतीय जनता के राष्ट्रवाद का परिपक्व रूप दिखाई पड़ा। वस्तुतः भारत बनाम इंग्लैण्ड का मुद्दा स्पष्ट हो गया और भारतीय का आंदोलन पूर्णतः आजादी के रंग में रंगने लगा। अतः सरकार ने भी घोषणा की कि उन्हीं कैदियों पर मुकदमा चलेगा जिस पर बर्बरता एवं हत्या का आरोप है।
- आजाद हिंद फौज के केप्टन अब्दुल रशीद को 7 वर्ष की सजा दिए जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ जिसका नेतृत्व मुस्लिम लीग के छात्रों ने किया। इसमें कांग्रेस एवं कम्युनिस्ट पार्टी के छात्र संगठन भी शामिल हुए।

☞ **<u>शाही भारतीय नौसेना विद्रोह (18 फरवरी 1946)</u> - बाम्बे बंदरगाह पर खड़े हुए नौसैनिक प्रशिक्षण जहाज 'तलवार पर नाविकों ने ब्रिटिश नस्लवादी व्यवहार एवं सुविधाओं में कमी के मुद्दे पर ब्रिटिश सरकार का विरोध किया। इसी क्रम में नाविक पी.सी दत्त ने'तलवार' की दीवारों पर अंग्रेजों भारत छोड़ों लिख दिया।**

- फलतः उन्हें गिरफ्तार किया गया। इसी क्रम में द शाही नौसेना के नाविकों ने सरकार से उन्हें रिहा करने की मांग की तो साथ ही आजाद हिंद फौज के बंदियों की रिहाई एवं इण्डोनेशिया से भारतीय सैनिकों के वापसी की मांग की शीघ्र ही यह विद्रोह अन्य जहाजों पर भी फैल गया और नाविकों ने सरकारी आदेश को मानने से इंकार कर दिया। यह विद्रोह 1857 के विद्रोह की याद ताजा करता है।
- वस्तुतः 1857 का विद्रोह भी नागरिक असंतोष को व्यक्त करता है जिसकी शुरुआत सैन्य छावनी से सैनिक असंतोष के रूप में हुई थी और इसमें सैनिकों के साथ-साथ बड़ी संख्या में असैनिक भी सम्मिलित राष्ट्रीय चेतना से मुक्त न होते हुए भी यह विद्रोह राष्ट्रीय चेतना के विकास में अपनी भूमिका निभाता है। इस दृष्टि से इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की कोर्ट में रखा जाता है।
- इस विद्रोह के पश्चात् भारत से कम्पनी शासन की समाप्ति कर दी गयी और भारत में क्राउन का शासन स्थापित हुआ। अब सरकार ने अपनी नीतियों में परिवर्तन करते हुए विलय और विस्तार की नीति त्याग दिया । इस तरह सरकार की नीतियों में परिवर्तन के लिए 1857 का विद्रोह ऐतिहासिक मोड़ साबित हुआ।
- इसी तरह, शाही भारतीय नौसैनिक विद्रोह भी जन असंतोष की अभिव्यक्ति था। नस्लवादी व्यवहार एवं निम्न स्तर की सुविधाएँ इस विद्रोह का तात्कालिक कारण था । सैनिकों से शुरू हुए इस विद्रोह में जगह-जगह असैनिक समूह भी सरकार विरोधी कार्यक्रम में शामिल होते गए।
- यह विद्रोह राष्ट्रवाद की परिपक्व अवस्था को सूचित करता है। इस विद्रोह के उपरांत सरकार ने कैबिनेट मिशन माध्यम से भारतीयों द्वारा निर्मित एक संविधान सभा और अंतरिम सरकार के गठन की घोषणा की। तत्पश्चात् भारत की आजादी सामने आयी।
- इस तरह, यह विद्रोह ब्रिटिश शासन की समाप्ति अर्थात् ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ताबूत में अंतिम कील साबित हुआ जिसमें प्रथम कील 1857 के विद्रोह ने लगायी थी।
- हड़ताली नाविकों ने केंद्रीय नौसेना हड़ताल समिति का गठन किया जिसके प्रमुख एम.एस.खान थे। नाविकों ने अपने जहाज पर कांग्रेस, मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी के झंडे लगाए जो इस बात का संकेत है कि विद्रोह दल और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर कार्य कर रहे थे। इन विद्रोहियों ने राजनीतिक कैदियों के रिहाई की मांग की।
- **विद्रोह का प्रसार बाम्बे, कोलाबा (महाराष्ट्र), कराँची, कलकत्ता, जबलपुर दिल्ली, अम्बाला, जालंधर आदि स्थानों पर फैला । यहाँ मौजूद रक्षा संस्थानों में कर्मचारियों ने हड़ताल की । अंततः जिन्ना एवं पटेल के प्रयासों से नाविकों ने आत्मसमर्पण कर दिया। पटेल ने लिखा कि ब्रिटिश सैन्य ताकतें इतने जबरदस्त तरीके से जुटी है कि वे विद्रोहियों को पूर्णतः नष्ट कर सकती।**
- इस विद्रोह के दौरान आम जनता ने विद्रोहियों के पक्ष में एकजुटता प्रदर्शित की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की इतिहास की पुस्तक में इस विद्रोह का उल्लेख चाहे ना मिलता हो किंतु इसकी भूमिका भारतीय जनमानस पर अंकित है।
- केन्द्रीय नौसेना हड़ताल समिति ने अपने अंतिम संदेश में कहा कि "हमारी हड़ताल हमारे राष्ट्र के जीवन की ऐतिहासिक घटना है। पहली बार सेना के जवानों एवं आम आदमी का खून एक साथ और एक लक्ष्य के लिए सड़कों पर बह रहा है। हम फौजी इसे कभी नहीं भूलेंगे। हमारी महान जनता जिंदाबाद ।

<u>नौसेना विद्रोह का प्रभाव</u> : इस विद्रोह द्वारा जनता की निडरता एवं संघर्ष क्षमता की सशक्त अभिव्यक्ति हुई। विद्रोहियों को भारतीयों ने ब्रिटिश शासन की पूर्ण समाप्ति के रूप में देखा और इसे वे स्वतंत्रता दिवस की तरह मनाने लगे।

- इस विद्रोह ने ब्रिटिश सरकार को भारतीयों के समक्ष झुकने के लिए विवश किया। इसी क्रम में सरकार ने घोषणा की कि INA के उन्हीं बंदियों पर मुकदमा चलेगा जिन पर बर्बरता एवं हत्या का आरोप है। साथ ही, इण्डोनेशिया से भारतीय सैनिकों को वापस बुलाने की घोषणा की गयी एवं भारतीय मामलों पर विचार के लिए एक उच्च स्तरीय कैबिनेट मिशन भारत भेजा गया।

<u>कैबिनेट मिशन (मार्च 1946)</u>

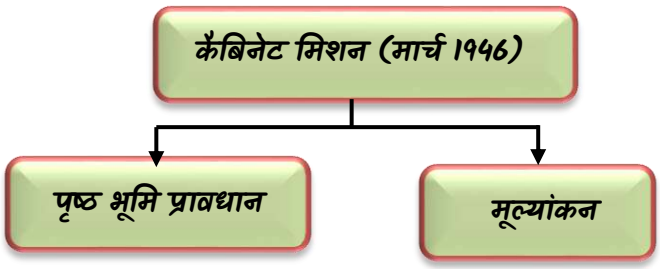

पृष्ठभूमि : – द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी थी। अतः उपनिवेशों पर पकड़ बनाए रखना सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण हुआ ब्रिटेन में संसदीय चुनाव हुए और वहां लेबर 1945 मे पार्टी को बहुमत मिला और ऐटली प्रधानमंत्री बने।

- ब्रिटेन की नई सरकार ने आरंभ में यह स्पष्ट कर दिया कि वह भारतीय संवैधानिक समस्या को अतिशीघ्र सुलझाना चाहती है। चुनाव में सत्ता परिवर्तन से यह स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश जनता भी सरकार की नीतियों में परिवर्तन चाहती है।
- इसी क्रम में, ऐटली ने भारत के संदर्भ में कहा कि अल्पसंख्यकों की मांगें विचारणीय है किंतु उन्हें बहुसंख्यकों के हितों की उपेक्षा कर के पूरा नहीं किया जा सकता। यह ब्रिटिश सरकार के दृष्टिकोण में नीतिगत परिवर्तन को दर्शाता है।
- इसी क्रम में, ब्रिटिश सरकार ने 1946 में तीन सदस्यीय कैबिनेट मिशन भारत भेजने की घोषणा की। इसमें शामिल थे –

पेंथिक लॉरेन्स-भारत सचिव
स्टेफार्ड क्रिप्स –व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष
ए. वी. एलेक्ज़ेंडर- ब्रिटिश नौसेना प्रमुख

- मार्च 1946 में कैबिनेट मिशन भारत पहुँचा और मई 1946 में उसने अपनी योजना प्रस्तुत की।

प्रावधान :- कैबिनेट मिशन के तहत एक भारतीय परिसंघ के निर्माण की योजना प्रस्तुत की गयी जिसमें सभी ब्रिटिश प्रांत और देशी रियासतें शामिल थी। तथा इस एकीकृत संघ को केवल रक्षा विदेशी मामलें एवं संचार के विषय दिए गए । अन्य सभी अधिकार प्रांतो को दिया गया।

- पाकिस्तान की मांग को अस्वीकार कर दिया गया क्योंकि मुस्लिम बहुल प्रांतों का एक अलग राष्ट्र के रूप में सम्मिलित होना संभव नहीं था। साथ ही, इससे नयी तरह की समस्याएँ बड़ी हो सकती थी जैसे- पंजाब के जालंधर एवं अम्बाला डिविजन में हिंदू और सिख बहुसंख्यक थे, अतः वे भी विभाजन की मांग कर सकते थे।
- इसी तरह, सशस्त्र सेनाओं का विभाजन भी खतरनाक हो सकता था। सबसे बढ़कर विभाजन से प्रशासनिक और आर्थिक समस्याएं बड़ी हो सकती थी जैसे-पाकिस्तान बनने से उसके पूर्वी और पश्चिमी भागों के मध्य संचार की समस्या।

सम्पूर्ण भारतीय प्रांतों को 3 समूहों में रखा गया। समूह A- इसमें बाम्बे मद्रास, संयुक्त प्रांत, मध्य प्रांत, बिहार और उड़ीसा शामिल थे। (हिंदू बहुसंख्यक) समूह3 - इसमें पंजाब, उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत और सिंध शामिल था। (मुस्लिम बहुसंख्यक)

समूह-C- इसमें बंगाल एवं असम शामिल था (मुस्लिम बहुसंख्यक)

- **संविधान सभा का गठन भारतीयों द्वारा किया जाएगा । इस संविधान सभा का निर्वाचन प्रांतों की विधानसभा के सदस्य करेंगे** और प्रांत की जनसंख्या के आधार पर सदस्य संख्या निर्धारित होगी । 10 लाख की जनसंख्या पर एक प्रतिनिधि रखा जाएगा ।
- संविधान लागू होते ही देशी राज्यों पर से ब्रिटिश सर्वोच्चता समाप्त हो जाएगी और यह रियासतें भारतीय संघ के साथ संधि करने के लिए स्वतंत्र होगी।
- एक अंतरिम सरकार का गठन होगा जिसमें 14 सदस्य होंगे। इसमें मुख्य राजनीतिक दल और सम्प्रदाय के लोग शामिल होंगे। (कांग्रेस-6 मुस्लिम लीग सिख इसाई और पारसी धर्म के 1-1 सदस्य रखे जाएंगे ।)
- मूल्यांकन : - द्विराष्ट्र बाद सिद्धांत की समस्या को सुलझाने अर्थात् हिन्दू -मुस्लिम मतभेद को सुलझाने का एक ईमानदार प्रयास कैबिनेट मिशन द्वारा की गया था ।
- भारतीय संघ की स्थापना का प्रस्ताव देश की एकता को बनाये रखने की कांग्रेस की मांग के अनुरूप था जबकि प्रांतों को दी गयी आंतरिक स्वायत्तता मुस्लिम लीग के दृष्टिकोण के नजदीक था । साथ ही **पाकिस्तान की मांग को अस्वीकार करना भारत विभाजन को रोकने की दिशा में उठाया गया एक सकारात्मक कदम था।**
- इतना ही नहीं, भारतीयों द्वारा अंतरिम सरकार का गठन तथा संविधान सभा का निर्माण करना एक सकारात्मक पहलु था। किंतु केन्द्र की शक्तियों को सीमित कर प्रांतों को अत्यधिक अधिकार दिया गया जो अलगाव की दिशा में एक कदम था।

☞ **प्रधानमंत्री एटली की घोषणा (20 फरवरी 1947)**

- भारत में बढ़ते साम्प्रदायिक संघर्ष और ब्रिटिश राज पर बढ़ते दबाव ने प्रधानमंत्री एटली को इस घोषणा के लिए बाध्य किया कि जून 1948 तक हर हाल में भारत को आजाद कर दिया जाएगा और इसके लिए माउंटबेटन को नया वायसराय बनाकर भारत भेजा गया।
- ऐटली ने कहा कि सभी राजनीतिक दल मिल जुल कर नए उत्तरदायित्व को स्वीकार करेंगे और अपने राजनीतिक मतभेद भुलाकर कार्य करेंगे ।
- इस घोषणा का मुस्लिम लीग और कांग्रेस ने स्वागत किया क्योंकि यह व्यवहारिक स्तर पर देश की वर्तमान स्थिति के अनुसार की गयी घोषणा थी।

माउंटबेटन योजना / मनबाटन योजना, डिकी बर्ड योजना/ 3 जून की योजना (विभाजन के साथ हस्तांतरण की योजना): -

पृष्ठभूमि :-

- भारत में कैबिनेट मिशन ने पाकिस्तान की मांग को अस्वीकार कर दिया और एक अंतरिम सरकार तथा संविधान सभा के गठन की घोषणा की।
- अतः मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की मांग अधूरी रह गयी। अतः उसने 16 अगस्त 1946 को प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाने, लगे पाकिस्तान का नारा दिया जो साम्प्रदायिक

आधुनिक विश्व का इतिहास

अध्याय – I

पुनर्जागरण व धर्म सुधार

पुनर्जागरण (Renaissance in Europe) का शाब्दिक अर्थ होता है, "फिर से जागना" । चौंदहवीं और सोलहवीं शताब्दी के बीच यूरोप में जो सांस्कृतिक प्रगति हुई उसे ही "पुनर्जागरण" कहा जाता है ।

चौंदहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक यूरोप में सांस्कृतिक क्षेत्र में जो आश्चर्यजनक उन्नति हुई, उसे 'पुनर्जागरण' के नाम से पुकारा जाता है।

कथन

- **पं. जवाहरलाल नेहरू** का कथन है कि, "पुनर्जागरण का अर्थ विद्या का पुनर्जन्म तथा कला, विज्ञान और साहित्य तथा यूरोपीय भाषाओं का विकास है।"
- **इतिहासकार स्वेन** का कथन है कि, "पुनर्जागरण से ऐसे सामूहिक शब्द का बोध होता है जिसमें मध्यकाल की समाप्ति तथा आधुनिक काल के प्रारम्भ तक के बौद्धिक परिवर्तनों का समावेश होता है।"
- **प्रो. ल्यूकस** का कथन है कि, "चौंदहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के बीच में यूरोप में होने वाले महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तनों को 'पुनर्जागरण' कहते हैं।"
- **इतिहासकार डेविस** के अनुसार, "पुनर्जागरण शब्द मानव के स्वतंत्रता प्रिय, साहसी विचारों को जो मध्य युग में धर्माधिकारियों द्वारा जकड़े व बन्दी बना दिये गये थे, व्यक्त करता है।"
- **सीमोण्ड** के अनुसार, "पुनर्जागरण एक ऐसा आंदोलन है, जिसके फलस्वरूप पश्चिम के राष्ट्र मध्य युग से निकल कर वर्तमान युग के विचार तथा जीवन की पद्धतियों को ग्रहण करने लगे हैं।"
- **फिशर का** कथन है कि, "सर्वप्रथम इटली ने नगरों में प्राचीन यूनानी एवं रोमन कला, साहित्य का पुनः सृजन, मानववादी आंदोलन का प्रारम्भ, स्थापत्य कला एवं चित्रकला का नया स्वरूप, व्यक्तित्व एवं व्यक्तिवादी सिद्धांतों का विकास, नवीन दृष्टिकोण, वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक आलोचना, छापेखाने का आविष्कार, दर्शन शास्त्र एवं धर्मशास्त्र का नया स्वरूप तथा विवेचन इत्यादि तत्त्वों तथा विशेषताओं को सामूहिक रूप से 'पुनर्जागरण' कहते हैं ।

पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ-

1. **स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहन-** पुनर्जागरण ने स्वतंत्र चिंतन की विचारधारा को प्रोत्साहन दिया। अब मनुष्य परम्परागत विचारों और मान्यताओं को तर्क की कसौटी पर कसने लगा। अब मनुष्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदय हुआ।
2. **व्यक्तित्व का विकास-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप मनुष्य को प्राचीन रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं धार्मिक पाखण्डों से मुक्ति मिली। इसके फलस्वरूप मनुष्य के व्यक्तित्व का स्वतंत्र रूप से विकास हुआ।
3. **मानववादी विचारधारा का विकास-** पुनर्जागरण ने मानववादी विचारधारा का प्रसार किया। अब मनुष्य को यह प्रेरणा मिली की उसे परलोक की चिन्ता छोड़कर इस जीवन को आनन्द से बिताना चाहिए। धर्म एवं मोक्ष के स्थान पर मानव-जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाना चाहिए।
4. **देशी भाषाओं का विकास-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप देशी भाषाओं का अत्यधिक विकास हुआ। अब जन-साधारण की भाषाओं में ग्रंथ लिखे गए जिसके फलस्वरूप देशी भाषाओं का बहुत अधिक विकास हुआ।
5. **चित्रकला के क्षेत्र में उन्नति-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप चित्रकला के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई।
6. **वैज्ञानिक विचारधारा का विकास-** पुनर्जागरण के कारण वैज्ञानिक विचारधारा का भी विकास हुआ। अब सभी विषयों को तर्क एवं विज्ञान की कसौटी पर कसा जाने लगा।

पुनर्जागरण के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

1. **धर्म-युद्ध-**

- धर्मयुद्ध (क्रूसेड)-ईसाई धर्म के पवित्र तीर्थ स्थान जेरूसलम के अधिकार को लेकर ईसाइयों और मुसलमानों (सेल्जुक तुर्क) के बीच लड़े गये युद्ध इतिहास में 'धर्मयुद्धों के नाम से विख्यात हैं। ये युद्ध लगभग दो सदियों तक चलते रहे। इन धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप यूरोपवासी पूर्वी रोमन साम्राज्य (जो इन दिनों में बाइजेंटाइन साम्राज्य के नाम से प्रसिद्ध था) तथा पूर्वी देशों के संपर्क में आये।
- इस समय में जहाँ यूरोप अज्ञान एवं अन्धकार में डूबा हुआ था, पूर्वी देश ज्ञान के प्रकाश से आलोकित थे।
- पूर्वी देशों में अरब लोगों ने यूनान तथा भारतीय सभ्यताओं के संपर्क से अपनी एक नई समृद्ध सभ्यता का विकास कर लिया था। इस नवीन सभ्यता के संपर्क में आने पर यूरोपवासियों ने अनेक वस्तुएं देखी तथा उन्हें बनाने की पद्धति भी सीखी।
- इससे पहले वे लोग अरबों से कुतुबनुमा, वस्त्र बनाने की विधि, कागज और छापाखाने की जानकारी प्राप्त कर चुके थे।
- इन धर्म-युद्धों के कारण यूरोपवासियों को पूर्वी देशों की तर्क-शक्ति, प्रयोग पद्धति तथा वैज्ञानिक खोजों की पर्याप्त जानकारी प्राप्त हुई। उन्हें प्राचीन यूनानी तथा रोमन विद्वानों की पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिला। जिससे उन लोगों के ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई।
- धर्म-युद्धों के कारण यूरोप के पूर्वी देशों से व्यापारिक संबंध स्थापित हुए। यूरोप के अनेक साहसी लोगों ने पूर्वी देशों की यात्राएँ की तथा अपनी यात्राओं के विवरण लिखे, जिन्हें पढ़ने से यूरोपवासियों के संकीर्ण विचार समाप्त हुए तथा उनके ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई।
- धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप यूरोपवासियों को नवीन मार्गों की जानकारी मिली और यूरोप के कई साहसिक लोग पूर्वी देशों की यात्रा के लिए चल पड़े। उनमें से कुछ ने पूर्वी देशों की

यात्राओं के दिलचस्प वर्णन लिखे, जिन्हें पढ़कर यूरोपवासियों की कूप-मंडूकता दूर हुई।

- मध्ययुग में लोग अपने सर्वोच्च धर्माधिकारी पोप को ईश्वर का प्रतिनिधि मानने लगे थे। परन्तु जब धर्मयुद्धों में पोप की सम्पूर्ण शुभकामनाओं एवं आशीर्वाद के बाद भी ईसाइयों की पराजय हुई तो लाखों लोगों की धार्मिक आस्था डगमगा गई और वे सोचने लगे की पोप भी हमारी तरह एक साधारण मनुष्य मात्र है।

2. पूर्व से संपर्क-

पूर्वी देशों के संपर्क में आने से यूरोपवासी अत्यधिक प्रभावित हुए। अरब लोग स्वतंत्र रूप से चिंतन करते थे। उन्हें अरस्तू, प्लेटो आदि की पुस्तकों का भी ज्ञान था। इस प्रकार अरब लोगों ने यूरोपियनों का ध्यान यूनानी दर्शन, ज्ञान-विज्ञान आदि की ओर आकर्षित किया । यूरोपियन लोगों ने अरबों तथा चीन से कुतुबनुमा, बारूद, कागज, छापेखाने आदि की जानकारी प्राप्त की। इस प्रकार पूर्वी देशों के संपर्क में आने से यूरोपवासियों में स्वतंत्र चिंतन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि की भावनाएँ उत्पन्न हुई।

3. मंगोलों का योगदान-

- 13वीं शताब्दी में मंगोल नेता कुबलई खाँ ने एक विशाल मंगोल साम्राज्य स्थापित किया। कुबलई खाँ ने अपने दरबार में अनेक विद्वानों, साहित्यकारों, धर्म प्रचारकों, राजदूतों आदि को संरक्षण दे रखा था। इटली का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो भी उसके दरबार में पहुँचा था। चीन से लौटकर उसने अपनी यात्रा का रोचक वर्णन लिखा। इस वर्णन से यूरोपवासियों को नये-नये देशों की खोज करने तथा अपनी संस्कृति को विकसित करने की प्रेरणा मिली।
- उसने कुबलई खाँ से प्रभावित होकर समुद्री यात्रा के लिए प्रस्थान किया। अरबों तथा मंगोलों के संपर्क से यूरोपवासियों को छापाखाना, कुतुबनुमा, बारूद, कागज आदि की जानकारी हुई। इन चीजों की जानकारी ने यूरोपवासियों के दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।
- यूरोप के बहुत से देशों विशेषकर स्पेन, सिसली और सार्डिनिया में अरबों के बस जाने से पूर्व यूरोपवासियों को बहुत सी बातें सीखने को मिली। अरब लोग स्वतंत्र चिंतन के समर्थक थे और उन्हें यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिकों प्लेटो तथा अरस्तु की रचनाओं से विशेष लगाव था।
- ये दोनों विद्वान् स्वतंत्र विचारक थे और उनकी रचनाओं में धर्म का कोई संबंध न होता था। अरबों के संपर्क से यूरोपवासियों का ध्यान भी प्लेटो तथा अरस्तु की ओर आकर्षित हुआ। तेरहवीं सदी के मध्य में कुबलाई खाँ ने एक विशाल मंगोल साम्राज्य स्थापित किया और उसने अपने ही तरीके से यूरोप और एशिया को एक-दूसरे से परिचित कराने का प्रयास किया। उसके दरबार में जहाँ पोप के दूत तथा यूरोपीय देशों के व्यापारी एवं दस्तकार रहते थे, वहीं भारत तथा अन्य एशियाई देशों के विद्वान् भी रहते थे।

4. नगरों का विकास-

- व्यापार के विकास के कारण यूरोप में नगरों का विकास हुआ। व्यापारी लोग नगरों में रहने लगे। नगरों के विकास के कारण व्यापारी लोग धनवान बनते चले गये। इन्होंने अपने रहने के निवास स्थानों को सुन्दर चित्रों एवं मूर्तियों से सुसज्जित करवाया। नगरों के निवासी स्वतंत्र वातावरण को पसन्द करते थे तथा कठोर नियमों के बन्धनों में बँधने के लिए तैयार नहीं थे। ये लोग मध्ययुगीन रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। इन लोगों की प्राचीन यूनानी तथा रोमन साहित्य एवं कला में रुचि थी। अतः नगरों के विकास के कारण स्वतंत्र चिंतन की प्रवृत्ति का विकास हुआ तथा लोगों में प्राचीन यूनानी एवं रोमन साहित्य तथा कला के प्रति रुचि भी बढ़ी। इससे पुनर्जागरण को प्रोत्साहन मिला।

5. व्यापार का विकास-

- धर्म-युद्धों के कारण यूरोप के पूर्वी देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित हुए। इससे व्यापार की अत्यधिक उन्नति हुई। उस समय वेनिस, मिलान, फ्लोरेंस आदि व्यापार के प्रसिद्ध केन्द्र बन गए। इस व्यापारिक संपर्क से यूरोपवासियों के ज्ञान में वृद्धि हुई। व्यापारिक विकास के कारण अनेक नगरों का उदय एवं विकास भी हुआ। नगरों का वातावरण स्वतंत्रता का था जिससे व्यापारियों में स्वतंत्र चिंतन की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई। इसके अतिरिक्त धन की प्रचुरता के कारण व्यापारियों को अध्ययन करने का अवसर मिला। धनी व्यापारियों को बगदाद, काहिरा आदि से खरीदी हुई पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिला। जिससे उनके ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई। व्यापारी लोग साहित्यकारों, लेखकों, कवियों, विद्वानों, कलाकारों आदि को उदारतापूर्वक आर्थिक सहायता देने लगे। इसके फलस्वरूप साहित्य, कला, विज्ञान आदि क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण उन्नति हुई।

6. सामन्तों की शक्ति का क्षीण होना-

- मध्य युग में सामन्तों का अत्यधिक प्रभाव था। सामन्त अपने क्षेत्रों में शासकों की भांति शासन करते थे। वे सामान्य जनता से अनेक प्रकार के कर वसूल करते थे। ये लोग युद्धों एवं लूटमार में भी लिप्त रहते थे। सामन्तों के कारण गृह-कलह, अशांति एवं अराजकता व्याप्त थी। सामन्त और चर्च के धर्माधिकारी दोनों जनता का शोषण करते थे। परन्तु 14वीं शताब्दी के अन्त तक सामन्तों की शक्ति अत्यन्त क्षीण हो चुकी थी। सामन्तवाद के पतन के कारण यूरोप में सुदृढ़ एवं राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना हुई तथा अंशाति एवं अराजकता का वातावरण समाप्त हुआ। अब जनता के लिए स्वतंत्र रूप से चिंतन करना सुगम हो गया। परिणामस्वरूप साहित्य, कला, विज्ञान आदि की उन्नति के लिए अनुकूल वातावरण बन गया।

7. शिक्षा का विकास-

- मध्य युग के अन्त में शिक्षा की काफी उन्नति हुई। यूरोप के प्रमुख नगरों में विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। इन विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी किसी भी विषय का अध्ययन कर

अध्याय – 3

जर्मनी में नाजीवाद एंव इटली में फासीवाद

वाइमर गणराज्य (Weimar Republic) की स्थापना

जर्मनी में **वाइमर गणराज्य** (Weimar Republic) की स्थापना प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) में जर्मनी की हार और **जर्मन साम्राज्य के पतन** के बाद हुई थी। इसकी स्थापना से जुड़ी मुख्य जानकारी -

- **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:** प्रथम विश्व युद्ध के अंतिम चरण में, जर्मनी की स्थिति बिगड़ने पर **जर्मन सम्राट विलियम द्वितीय ने 10 नवंबर, 1918 को अपने पद से इस्तीफा दे दिया**। इसके बाद जर्मन साम्राज्य के खंडहरों पर एक नए गणराज्य की नींव रखी गई, जिसे वाइमर गणराज्य के नाम से जाना जाता है।
- **स्थापना की चुनौतियाँ:** इस नए गणराज्य को विरासत में **वर्साय की अपमानजनक संधि** मिली। हिटलर और कई राष्ट्रवादी जर्मनों का मानना था कि इस गणराज्य के नेताओं ने युद्ध के दौरान जर्मनी की "**पीठ में छुरा घोंपा**" था और वे देश की हार के लिए जिम्मेदार थे।
- **आर्थिक संकट:** वाइमर गणराज्य की शुरुआती अवधि **भयानक आर्थिक मंदी और मुद्रास्फीति** से भरी थी। 1923 तक स्थिति इतनी खराब हो गई थी कि जर्मन 'मार्क' का मूल्य लगभग शून्य हो गया और एक डॉलर की कीमत खरबों मार्क तक पहुँच गई थी। बेरोजगारी और महंगाई के कारण जनता इस चुनी हुई सरकार से काफी नाराज थी।
- **संसदीय प्रणाली की विफलता:** जर्मनी में **संसदीय परंपरा का अभाव** था और लोग इस नई व्यवस्था के दोषों से असंतुष्ट थे। लोकतांत्रिक सरकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जर्मनी के हितों की रक्षा करने में विफल रही, जिससे जनता एक "मजबूत नेता" की तलाश करने लगी।
- **अंततः** वाइमर गणराज्य का अस्तित्व तब समाप्त होना शुरू हुआ जब **30 जनवरी, 1933 को एडोल्फ हिटलर जर्मनी का चांसलर बना**। हिटलर ने जल्द ही संसद की शक्तियाँ अपने हाथों में ले लीं और 1933 में वाइमर गणराज्य का औपचारिक रूप से **नाजी जर्मनी में विलय** हो गया।

यह गणराज्य एक "**बीमार गणराज्य**" के रूप में उभरा था, जिसकी विफलता ने ही जर्मनी में नाजीवाद और हिटलर के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

वाइमर गणराज्य के सामने चुनौतियाँ

वाइमर गणराज्य (Weimar Republic) की स्थापना प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी के लिए एक अत्यंत कठिन और चुनौतीपूर्ण समय में हुई थी। इस गणराज्य के सामने मौजूद प्रमुख चुनौतियों का विवरण नीचे दिया गया है:

1. वर्साय की अपमानजनक संधि

वाइमर गणराज्य के सामने सबसे बड़ी चुनौती **वर्साय की संधि** की शर्तों को लागू करना और उससे उत्पन्न राष्ट्रीय अपमान से निपटना था।

- इस संधि ने जर्मनी को आध्यात्मिक और भौतिक रूप से कुचल दिया था।
- गणराज्य के नेताओं (समाजवादियों, कैथोलिकों और यहूदियों) पर यह आरोप लगाया गया कि उन्होंने युद्ध के दौरान जर्मनी की "**पीठ में छुरा घोंपा**" (Stab in the back myth) है।
- राष्ट्रवादियों ने इसे एक "बीमार गणराज्य" माना जिसने अन्यायपूर्ण संधियों और सुलह की नीति को स्वीकार किया था।

2. भीषण आर्थिक संकट और मुद्रास्फीति

गणराज्य को विरासत में एक जर्जर अर्थव्यवस्था मिली थी, जो समय के साथ और बिगड़ती गई:

- **अति-मुद्रास्फीति (Hyperinflation):** 1921-23 के दौरान आर्थिक संकट इतना गहरा गया कि जर्मन मुद्रा 'मार्क' का मूल्य लगभग शून्य हो गया। 1914 में जहाँ एक डॉलर 4.2 मार्क का था, वहीं नवंबर 1923 तक इसकी कीमत **25 खरब 20 अरब मार्क** तक पहुँच गई थी।
- **बेरोजगारी:** 1929 की वैश्विक आर्थिक मंदी (Great Depression) ने स्थिति को और खराब कर दिया। 1930 तक जर्मनी में लगभग **50 लाख से अधिक लोग बेरोजगार** हो गए थे।

3. राजनीतिक अस्थिरता और विरोध

वाइमर गणराज्य को आंतरिक रूप से कई राजनीतिक गुटों से कड़ी चुनौती मिल रही थी:

- **वामपंथी और दक्षिणपंथी हमले:** जहाँ एक ओर **साम्यवादियों (Communists)** ने क्रांतिकारी तरीकों से सत्ता हथियाने की कोशिश की, वहीं दूसरी ओर प्रतिक्रियावादी तत्वों ने गणतंत्र की विफलताओं का लाभ उठाकर लोकतंत्र के खिलाफ प्रचार किया।
- **संसदीय परंपरा का अभाव:** जर्मनी में संसदीय शासन प्रणाली के प्रति लोगों में विश्वास की कमी थी, जिसके कारण तानाशाही के लिए रास्ता साफ होने लगा। लोगों को लगा कि निर्वाचित सरकार केवल अपना ठाट-बाट देख रही है और देश की समस्याओं को हल करने में अक्षम है।

4. अंतर्राष्ट्रीय दबाव और सैन्य सीमाएं

- जर्मनी के **अस्त्र-शस्त्र और सैन्य शक्ति** को बहुत छोटा कर दिया गया था।
- फ्रांस का निरंतर शत्रुतापूर्ण व्यवहार, जैसे कि रुहर (Ruhr) और राइनलैंड (Rhineland) पर कब्जा, गणराज्य के लिए एक बड़ी कूटनीतिक चुनौती थी।
- सुरक्षा और निशस्त्रीकरण के मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले अंतहीन विवादों ने जर्मन जनता के आक्रोश को और बढ़ा दिया।

इन सभी चुनौतियों—आर्थिक बदहाली, राजनीतिक अस्थिरता और राष्ट्रीय अपमान—ने संयुक्त रूप से एक ऐसा माहौल तैयार किया जिसमें जनता एक "मजबूत नेता" की तलाश करने लगी, जिससे अंततः **नाजीवाद और एडोल्फ हिटलर** के उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी और इटली में **आर्थिक संकट** ने **राजनैतिक रेडिकलवाद** (Political Radicalism) के उदय के लिए एक उपजाऊ ज़मीन तैयार की। इन दोनों देशों में आर्थिक बदहाली और राजनीतिक अस्थिरता ने उग्र विचारधाराओं को सत्ता तक पहुँचाया।

जर्मनी में आर्थिक संकट और रेडिकलवाद

जर्मनी में वाइमर गणराज्य की स्थापना के समय से ही स्थिति अत्यंत चुनौतीपूर्ण थी:

- **वर्साय की संधि और अपमान:** गणराज्य के नेताओं पर युद्ध में हार के लिए "पीठ में छुरा घोंपने" का आरोप लगाया गया, जिसने दक्षिणपंथी रेडिकलवाद को बढ़ावा दिया।
- **भीषण मुद्रास्फीति (1921-23):** युद्ध के बाद जर्मनी की आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो गई कि 1923 तक जर्मन 'मार्क' का मूल्य लगभग शून्य हो गया। 1914 में जहाँ एक डॉलर 4.2 मार्क का था, वहीं नवंबर 1923 तक इसकी कीमत **25 खरब 20 अरब मार्क** तक पहुँच गई थी। इसने मध्यम वर्ग को कंगाल बना दिया, जिससे वे नाजी पार्टी (NSDAP) जैसे रेडिकल समूहों की ओर आकर्षित होने लगे।
- **1929 की आर्थिक मंदी (Great Depression):** इस मंदी ने जर्मनी में बेरोजगारी की समस्या को चरम पर पहुँचा दिया। 1930 तक **50 लाख से अधिक लोग बेरोजगार** हो गए थे।
- **नाजीवाद का उदय:** इस हताशा के माहौल में हिटलर ने बेरोजगारी दूर करने और वर्साय की संधि को खत्म करने का आश्वासन दिया। परिणामस्वरूप, 1930 के चुनावों में नाजियों की सीटें 12 से बढ़कर 107 हो गईं, जिससे वे एक बड़ी राजनीतिक शक्ति बन गए।

इटली में आर्थिक अस्थिरता और संघर्ष

इटली में भी आर्थिक संकट ने क्रांतिकारी आंदोलनों को जन्म दिया:

- **युद्धोत्तर अव्यवस्था:** युद्ध के कारण इटली की आर्थिक संरचना ध्वस्त हो गई थी, जिससे भारी बेरोजगारी और महंगाई पैदा हुई।
- **समाजवादी और साम्यवादी रेडिकलवाद:** आर्थिक संकट के कारण 1919-1920 के दौरान मजदूरों और किसानों ने सड़कों पर विरोध प्रदर्शन किए। समाजवादी कार्यकर्ताओं ने उत्तरी इटली के कारखानों पर कब्जा कर लिया और कैथोलिक किसानों ने जमींदारों की जमीनें छीन लीं।
- **फासीवाद का उदय:** साम्यवादी क्रांति के डर ने उद्योगपतियों और जमींदारों को डरा दिया। बेनिटो मुसोलिनी ने इस डर का लाभ उठाया और खुद को साम्यवाद के खिलाफ एकमात्र रक्षक के रूप में पेश किया, जिससे इटली में फासीवादी तानाशाही का मार्ग प्रशस्त हुआ।

निष्कर्ष - आर्थिक बदहाली ने जनता का लोकतंत्र से विश्वास कम कर दिया और उन्हें एक ऐसे "मजबूत नेता" की तलाश करने के लिए मजबूर किया जो अनुशासन और समृद्धि ला सके, जिससे अंततः नाजीवाद और फासीवाद जैसी तानाशाही विचारधाराओं की जीत हुई।

नाजीवाद

- **नाजीवाद** (Nazism) मुख्य रूप से जर्मन तानाशाह **एडोल्फ हिटलर** की एक उग्र राष्ट्रवादी, नस्लवादी और सर्वाधिकारवादी विचारधारा थी, जो "नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी" **(नाजी पार्टी)** के सिद्धांतों पर आधारित थी। यह विचारधारा 1933 से 1945 तक जर्मनी में प्रभावी रही और इसने न केवल जर्मनी बल्कि पूरी दुनिया के इतिहास को बदल दिया।

नाजीवाद के प्रमुख पहलुओं का विस्तृत विवरण नीचे दिया गया है:

नाजीवाद के मुख्य सिद्धांत

- **नस्लीय श्रेष्ठता (आर्यवाद):** नाजियों का मानना था कि **आर्य (जर्मन)** विश्व की सर्वश्रेष्ठ नस्ल हैं और उन्हें पूरी दुनिया पर शासन करने का नैसर्गिक अधिकार है। हिटलर ने "शुद्ध रक्त" की संतान को बढ़ावा देने और अस्वस्थ या "अवांछनीय" लोगों के जन्म पर रोक लगाने की वकालत की।
- **यहूदी-विरोध (Anti-Semitism):** नाजी विचारधारा में यहूदियों के प्रति अत्यधिक नफरत थी। उन्हें जर्मनी की आर्थिक मंदी, प्रथम विश्व युद्ध में हार और "संस्कृति के पतन" के लिए जिम्मेदार ठहराया गया।
- **तानाशाही और 'फ्यूरर' सिद्धांत:** नाजीवाद लोकतंत्र और बहुदलीय शासन का पूरी तरह विरोध करता था। "एक राष्ट्र, एक दल, एक नेता" के तहत हिटलर को सर्वोच्च शक्ति (फ्यूरर) माना गया, जिसके आदेश का पालन करना हर नागरिक का कर्तव्य था।
- **लेबेन्सराम (विस्तारवाद):** हिटलर का मानना था कि श्रेष्ठ जर्मन जाति के फलने-फूलने के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता है, जिसे उसने **'लेबेन्सराम'** (रहने की जगह) कहा। इसी नीति के कारण उसने पड़ोसी देशों पर आक्रमण किए।
- **साम्यवाद और लोकतंत्र का विरोध:** नाजीवाद मार्क्सवाद और संसदीय लोकतंत्र को कमजोर और राष्ट्र के लिए घातक मानता था।

नाजीवाद के उदय के प्रमुख कारण

1. **वर्साय की संधि का अपमान:** प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी पर थोपी गई यह संधि अत्यंत अपमानजनक थी, जिसने जर्मन जनता में बदले की भावना पैदा की।
2. **भीषण आर्थिक संकट:** 1929 की वैश्विक आर्थिक मंदी के कारण जर्मनी में बेरोजगारी (50 लाख से अधिक लोग) और महंगाई चरम पर पहुंच गई, जिससे जनता का लोकतांत्रिक सरकार से भरोसा उठ गया।
3. **वाइमर गणराज्य की विफलता:** तत्कालीन लोकतांत्रिक सरकार (वाइमर गणराज्य) आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं को सुलझाने में अक्षम रही, जिससे तानाशाही के लिए रास्ता साफ हो गया।
4. **हिटलर का चमत्कारी व्यक्तित्व:** हिटलर एक असाधारण वक्ता था। उसने अपने नफरत भरे लेकिन ओजस्वी भाषणों